।। श्री हरिः ।।

।। श्री धर्मसम्राट् विजयते ।।

।। श्री करपात्रप्रिया ग्रन्थमाला ।।

जन्म दिन कैसे मनाये



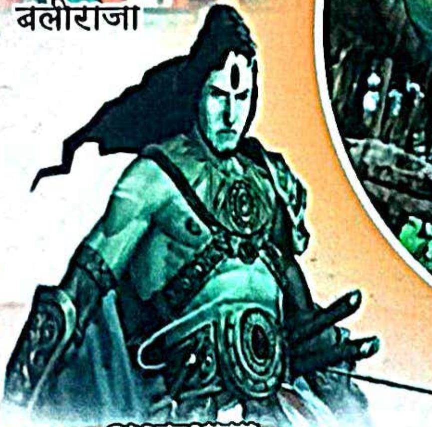






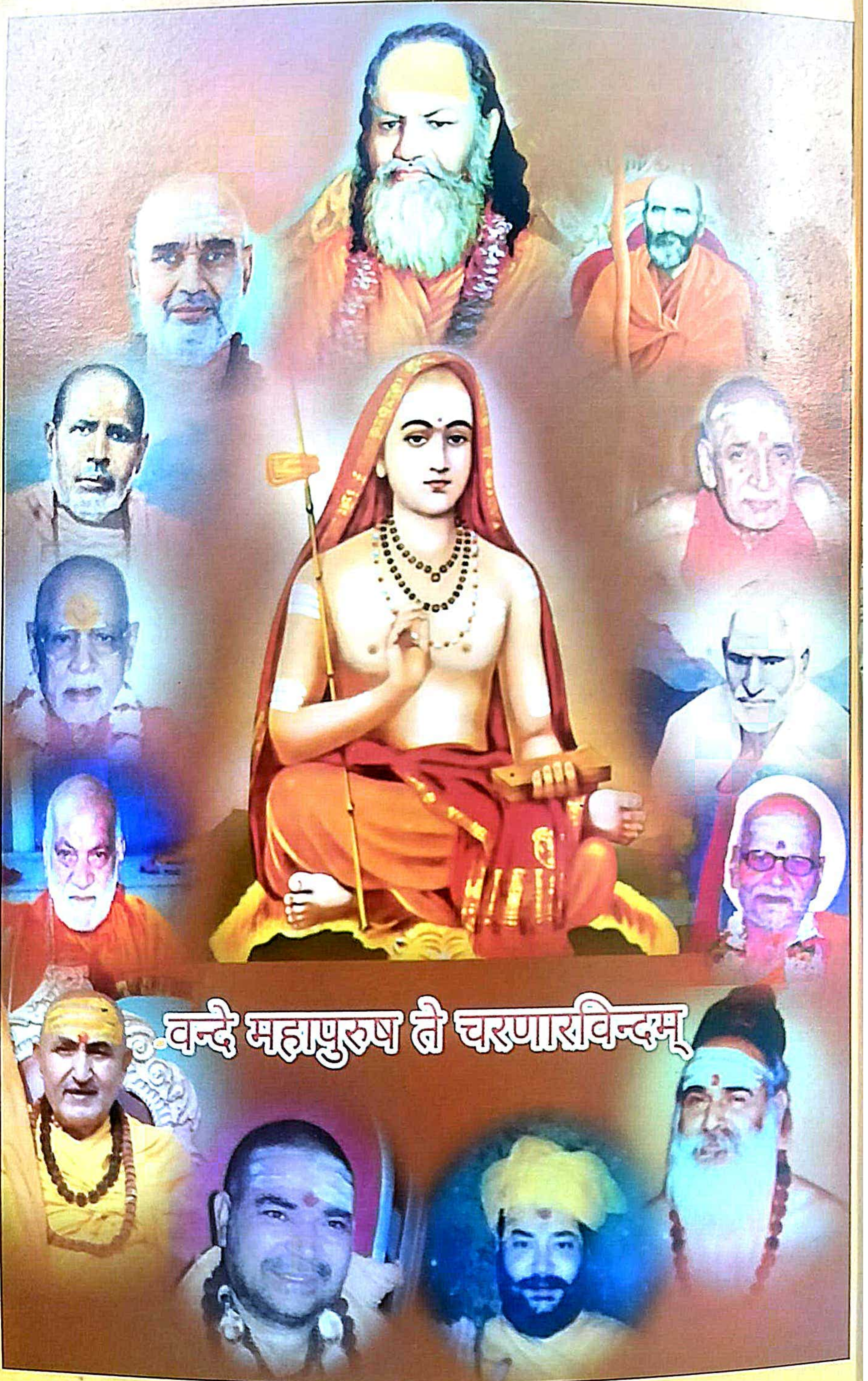








समर्थश्री त्र्यम्बकेश्वर चैतन्य :


वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्



श्री धर्मसम्राट प्रकाशनम्
रजिस्ट्रेशन नं. : २०१८०१०२६०२४४१८
प्रथम संस्करण : २०१९
प्रकाशन तिथि : शारदीय नवरात्री विक्रमी सम्वत् २०७६

अग्रिम प्रकाशनार्थ सहयोग - २५ रुपये

: प्रकाशन :
श्रीधर्मसम्राट प्रकाशनम्
धर्मसंघ महाविद्यालय प्रबलजी महाराज की कुटिया
कुटिया रोड भादरा, जिला-हनुमानगढ (राजस्थान)
सम्पर्कसूत्र : ९८९२९३४७१३/८००५५००५३९

: प्राप्तिस्थान :
धर्मसंघ महाविद्यालय
(श्री. प्रबलजी महाराज की कुटिया)
कुटिया रोड, भादरा,
जिला-हनुमानगढ (राजस्थान)
मोबा. : ९४१४५७८९३८

: प्राप्तिस्थान :
धर्म संघ संस्कृत विद्यालय ६३७/५०
शिवकुटी निकट रामबगिया
प्रयागराज उ.प्र.-२११००४
मोबा. : ९५८०७१३०८०

: प्राप्तिस्थान :
अन्नपूर्णा व्याकरण विद्यालय,
गणपति गौशाला के पास,पलवाडा रोड,
बृजघाट, जिला-हापुड, उ.प्र.
मोबा. : ९५५७३४४४८२

: प्राप्तिस्थान :
११३/११४, जय राय माता एक्सपोर्ट,
गुड्डेंचा इंडस्ट्रीयल कॉम्पलेक्स,
आकुर्ली रोड, कांदिवली (इस्ट),
मुंबई-४०० १०१.
मोबा. : ९३२३०७८४६५

डॉ. दिनेश कुमार गर्ग
(एसो. प्रोफेसर)
विभागाध्यक्ष
प्राचीन राजशास्त्रार्थ शास्त्र विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी - २२१००२
मो. 9450229104



नैक द्वारा ए ग्रेड प्राप्त

आवासीय पता :
१८१६०, एन.एस. मीनाहाल,
कुन्ती विहार कालोनी,
तपोवन आश्रम, (सारंग चौराह के पास)
सारनाथ - वाराणसी
Email: dr.dkgarg000@yahoo.in
मो. 9450229104

पत्रांक :

दिनांक :

आज के युग मे काल के प्रभाव से पश्चात्य संस्कृति के भारतीय समाज में प्रविष्ट होने से हम अनादि सनातन संस्कृति के अनुयायी भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को विस्मृत करते जा रहे हैं । गर्भाधान संस्कार का कोई महत्त्व नहीं रह गया, जो हमारे जीवन का मूल है, "जीवेम शरदः शतम्" की परीकल्पना बिना ऋषिप्रसाद के सम्भव ही नहीं है, दीर्घायुष्य में मूल कारण अभिवादनशीलता है "आयु, विद्या, यश तथा बल" इन चार का वर्धन गुरुजनों के आशीर्वचन से ही है। "जन्मदिवस" के दिन प्रातः उठकर श्री ठाकुर जी के अभिवादन के पश्चात् मातृ पितृचरणों को वन्दन, साथ ही जितने भी गुरुजन है सबको यथा योग्य प्रणाम, मन्दिर में भगवदर्चा संकीर्तन तथा अखण्ड दीपक को जलाने से, प्रकाश की भी प्राप्ती एवं अखण्ड सौभाग्य की संम्प्राप्ति होती है , । तुलादान से अनेक अरिष्टों की शान्ति तथा मंगळ स्वस्तिपाठ से जीवन में सर्वदा मंगल रहता है। परमपूज्य साधक स्वामी श्री त्र्यम्बकेश्वरजी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थ से हमारा भारतीय सनातन समाज अति लाभान्वित होगा तथा "जन्मदिवस" उत्सव शास्त्रीय विधि के अनुसार मनाने से भारतीय संस्कृति में संरक्षण के साथ बाल मन पर दृढ संस्कार विकसित होगा, समाज संस्कार संम्पन्न होगा तो देश समृध्द एवं उन्नति पथ पर अग्रसरित होगा ।

दिनेश कुमार गर्ग

विषय सूची



भारतात्मा प्राणातिप्रिय बन्धुओ...

आज एक अत्यावश्यक विषय पर लिखने हेतु लेखनी मचल उठी है। यन्त्रवत शब्दों वाक्यों को आकार देती हुई, चलती भी जा रही है । और एक मैं मूक साक्षी दृष्टा की भाँति देख रहा हूँ। कि ये कौन है ? जो बलात मेरे ऊपर नियंत्रण करके लिखे जा रहा है। प्रतीत होता है, जैसे यह भावावेश है।

अथवा समझें यह अर्न्तमन की दमित वेदना है। विश्वकी सर्वोत्तम सनातन संस्कृति रुप पावन प्रवाह के साक्षी, ऋषि परंपरा के उत्तराधिकारी सनातन धर्मावलम्बी आर्य हिन्दू जन अपने शास्त्रीय वैदिक आचार-विचार को विसारकर अशास्त्रीय कपोलकल्पित (मनगढंत) पाश्चात्य कृत्यों का अन्धानुकरण करके मिथ्या फलहीन निरर्थक प्रसन्नता का अभिनय करते हुए से दिखते हैं। जैसे कि भाषा, वेष, भोजन उत्सव आदि ।

पराधीनता की बेड़ियों से कहने को तो भारतवासी स्वतंत्र हुए, लेकिन मानसिकता में गुलामी बसी हुई है। शासित और शोषित सदैव शासक एवं शोषक की निंदा भी करते हैं, अंदर से विद्रोही बनने की इच्छा भी रखते हैं। परन्तु अवसर मिलते ही हर प्रकार से शासक के जैसे उठना-बैठना बोलना-चलना, खाना-पीना, पहनना-ओढना, नाचना-गाना करने लगते हैं। और आज वही हो रहा है। ये सच है कि, भगवान के विविध प्रत्यक्ष अवतारों से धन्य है हिन्दु जाति। उनके चरण कमलों की रज से पवित्र है । ये भारत माँ की माटी । परमतपस्वी त्यागी ज्ञानी विरक्त तत्वदर्शी ऋषियों की अमिट कथा है, ये पवित्र संस्कृति । मनु, पृथु, मान्धाता, भरत, हरिश्चंद्र, युधिष्ठिर, नल, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, महाराणाप्रताप, शिवाजी, गुरुगोविंद सिंह, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह जैसे अनेकों वीरों बलिदानियों धर्मरक्षकों की स्मृतियों से

सजी है ये अमरगाथा । सती अनसूया, शाण्डिली, सुकन्या, मीरा, पद्मिनी, रानी लक्ष्मीबाई जैसी सतियों के दिव्य तेज से गौरवान्वित है ये हिन्दुजाति। इसके गौरव की रक्षा हेतु असंख्य पुण्यात्माओं ने हंसते हंसते अपने प्राणों की आहूति दी है।

ए हिन्दुवंशधरों । तुम भूल सकते हो । भूल जाओ । परंतु सूर्य साक्षी है ये कैसे भूलेगा । इनकी आँखों के सामने छोटे-छोटे दुध मुहे बालक भालों की नोंक पर उछाल-उछाल कर चीरे गये हैं। दीवारों में चिने गये हैं। खौलते हुए तेल के कडाहों में तले गये हैं। गंगा का बहता हुआ नीर साक्षी है, स्त्री जाति के अन्त हीन क्रन्दन का। कैसे मातृशक्ति की अस्मिता को तारतार किया गया ।

ये सरसराती हवा आज भी गगनचुम्बी मंदिर शिखरों के बिखरे हुए शिला खण्डों का स्मरण करके कंपकंपाती सी प्रतीत होती है।

आकाश मानों इसीलिए नीला जैसा पड़ गया है कि कैस-कैसे अत्याचारों को भारत की धर्म निष्ठ जनता ने सहा है।

बंदा बैरागी भूल गये । जौहर पद्मिनी का भूल गये ।
भूले जौरावर, फतहसिंह, गुरु तेग बहादुर भूल गये ।
तुम राणा वीर शिवा भूले, पृथ्वीराज को भूल गये ।
सोमनाथ नालंदा भूले, तुम बंग सिंध को भूल गये ।।

ओ निष्ठुर हिन्दुओं! हाँ तुम भूल जाओ, अपने पूर्वजों के बलिदानों को। गुरु तेग बहादुर के कटे हुए सिर वाले (चाँदनी चौक दिल्ली) शीशगंज गुरुद्वारे की एक-एक ईंट चीख-चीखकर कहती है, " ये स्थान केवल पाप मिटाकर पुण्य कमाने हेतु माथा टेकने मात्र के लिए नहीं है। "

अपितु यह स्थान है राष्ट्रभक्ति की अग्निज्वाला में अपने स्वार्थ को हवन करके राष्ट्रहित में अपने अहंकार को गलाकर एकजुट होने को।

एक समय था हम अपनी चोटी काटने की बात भी करने वाले की गर्दन काट ड़ालते थे । अथवा अपनी गर्दन तो कटा सकते थे परन्तु चोटी नहीं कटाते थे । किन्तु आज हिन्दु की चोटी कहाँ गयी। हम चोटी रखाते हुए लजाते हैं । पैसा देकर चोटी कटाते हैं । क्या हो गया हिन्दु को ।

हिन्दु को अपनी दिव्यभाषा देवभाषा, संस्कृति, संस्कार, व्यवहार, व्यापार, उपचार, उपकार की भाषा संस्कृत का गौरव न रहा । उसे राष्ट्रभाषा हिन्दी नहीं सुहाती । हिन्दी संस्कृति बंगला, तमिल, कन्नड, तेलगू, पंजाबी, भोजपुरी, गुजराती, उडिया आदिभाषाओं के विद्वानों को विद्वान मानता ही नहीं। केवल अँग्रेजी को विद्वत्ता की, बडप्पन की, योग्यता की कसौटी मानता है। चाहे अशुद्ध हो पर बोलनेवाले को लोग बडी आदर की दृष्टि से देखते हैं ।

(हम किसी भाषा के विरोधी नहीं, परंतु स्वभाषा के कट्टर समर्थक अवश्य हैं ।)

आज विश्व के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक संस्थान नासा ने संस्कृत को विशुद्धतम पूर्णतम दिव्यतम भाषा मानकर इक्कीसवीं सदी से आगे का समय संस्कृत को घोषित किया है। और एक हम हैं, कि संस्कृत को हीन मानकर उपेक्षा करते हैं।

दासत्व भाव का प्रभाव ऐसा है कि दर्शन विद्या की बात चले तो सुकरात, प्लैटो, अरस्तु की बात होती है, पाणिना, पतंजली, कपिल, गौतम, कणाद, व्यास, जैमिनी की चर्चा कोई नहीं करेगा । जबकि भारतीय दर्शन सिध्दान्त के प्रथम पाद में ही संसार का समस्त चिन्तन डूब जायेगा ।

भगवद् गीतारुपी सूर्यप्रभा के सम्मुख जुगनू सदृश टिमटिमाते ये विश्व के समग्र विचार विलुप्त हो जायेंगे ।

आओ ! अतीत के पन्नों से, कुछ सीखें और सिखायें हम ।
शुभगौरव पूर्ण भाव लेकर, दुनिया को शौर्य दिखाये हम।।
सिंहों की छाती पर चढ़कर, दाँतो को गिनते थे हिंदू ।
गर्वित सागर को अंजलि में, लेकर पी जाते थे हिंदू ।।
नचिकेता ज्ञान पिंपासू बन, यमलोक द्वार तक जा पहुंचा।
यमराज हारकर लौट गये, है सावित्री का यश उँचा ।।
गंगा धरती पर उतर वहीं, गाती लहरें भारत गाथा ।
ज्ञान यहीं से गया जगत में,वे ऋषिगण भी सब थे हिन्दू।।
भगवान जहां अवतार लिए, वे पुण्यपुरुष भी थे हिंदू ।
सागर पर सेतू बाँध दिया, कैसे वे अद्‌भुत थे हिन्दु ।।
था बसा द्वारिका सागर में, उसमें भी रहते थे हिन्दु ।

ऐ सुनो सनातन धर्म सुधी ! उठकर फिर अंगडाई लो ।
धीर वीर गंभीर ज्ञान तप, शील सत्य व्रत भाई लो ।।
अपनी भाषा, वेष, महोत्सव, भोजन भारत सा होगा ।
आदर्श राम-सीता होंगे, जीवन सात्विक शुचि होगा ।।
अपने पर्व जन्मदिन जैसे, वैदिक विधि से ही होवे।
होली, दिवाली, रक्षाबन्धंन, पूर्ण स्वदेशी मय होवे ।।

छाया पत्र पुष्प फल चाहे। दस दस वृक्ष लगायें हम।
सीचें सूखे वृक्ष हमेशा, दो तरु तो उपजायें हम।।
जल की रक्षा करें यतन से, इसे न व्यर्थ गवायें हम ।
बिजली बचत राष्ट्रहित करना, समझे वा समझायें हम।।
धरती माँ आधार जगत का, इसे न गन्दा कभी करें ।

तन-मन-वस्त्र साफ हम रखें, काम समय पर सभी करें ।।
नहीं ईर्ष्या द्वेष कपट हो, ना निन्दा उपहास करें ।
करें बडों का आदर हर दम, एक दिवस उपवास करें ।।
नही धनिक बनने को करना, हमको झूठा कर्म कभी ।
राष्ट्रभक्ति से भरा हृदय हो, हम ना त्यागे धर्म कभी ।।
गो सेवा करनी है मुझको, यही हमेशा भाव रहे।
वैज्ञानिक बनकर भारत का, मान बढाऊ चाव रहें ।।
क्या है जिसके लिए लडूँ मैं, यही धरा रह जायेगा ।
खाली हाथ जगत में आया, हाथ पसारे जायेगा ।।
देकर खुशियाँ अधिक कमायें, न्याय नीति पर चलें सदा ।
मन की खुशी बड़ी सम्पत्ति, यही भाव मन पले सदा ।।

इसी पवित्र हिन्दू हित भाव से प्रेरित होकर अपनी जाति का गौरवमय इतिहास स्मरण करते हुए, सभी अभिभावकों से, युवा साथियों से, छोटे बच्चे बच्चियों से, राष्ट्रभक्ति पूर्ण विनम्र आग्रह है कि आप हिन्दू हैं, ऐसा मात्र कहने से काम न चलेगा। आप हिन्दू है ऐसा मात्र सोचने से भी काम न चलेगा । अपितु मैं हिन्दू हूँ तो मुझे हिन्दूओं के सनातन धर्म मूलक पवित्र ग्रन्थों को पढ़कर उनके अनुसार आचरण करना है। जैसे कि एक मुसलमान कुरान के अनुसार चलता है। वह अपनी ईद अँग्रेजी तारीख से नहीं मनाता । कुरान के हिसाब से मनाता है।

एक ईसाई बाईबिल के अनुसार चलता है, चर्च जाता है आदि । तब एक हिन्दू वेद-पुराण-स्मृति के अनुसार क्यों नहीं चल सकता। मैं हिन्दू हूँ तो मुझे अपने धर्मग्रंथ के अनुसार ही अपने पर्व उत्सव मनाने हैं । अपना जन्मदिन मनाना है । इस पुस्तक का मूल उद्देश्य भी यही है कि हम अपना जन्मदिन विशुद्ध भारतीय वैदिक विधि से कैसे मनायें । आशा करते हैं कि यह प्रयास आपको

भारतीयता से जोडकर प्रसन्नता प्रदान करेगा । हिन्दुत्व की वास्तविक शक्ति संसार को संरक्षण दे यही सद्‌भाव है। क्योंकि जब-जब हिन्दुत्व शक्तिशाली रहा तब-तब संसार शान्त, समृद्ध सुरक्षित रहा है। जब-जब संघर्ष करता हिन्दुत्व दुर्बल हुआ तब-तब स्त्री बच्चे अशक्त, दुर्बल दुष्टों द्वारा सताये गये हैं।

आओ हम शक्तिशाली बने। पर इसलिए नहीं कि दूसरों को सताये बल्कि इसलिए बनें कि कोई नीच हमें सता न सके । हमारे रहते किसी पर अत्याचार न होवे । उसी शक्ति को प्राप्त करने का श्री गणेश है, वैदिक विधि से - जन्मोत्सव मनाना तथा औरों को प्रेम पूर्ण आग्रह करके प्रेरित करना । और आपसे यह भी आग्रह है कि क्या विश्वभर में ऐसी कोई जाति है? जो हृदय पर हाथ रखकर कह सके कि परमात्मा उनके यहाँ अवतरित हुआ है। हाँ है, केवल और केवल एक मात्र हिन्दू जाति। जिसका बच्चा-बच्चा पूर्ण विश्वास से कहता है श्रीराम अयोध्या में, श्रीकृष्ण मथुरा में हिन्दुकुल (वेदोपासक) में प्रकट हुए। केवल हमारा ही देश है जहाँ प्रभु अवतार लेते हैं। अन्य किसी देश को यह गौरव ही नही है। ईसाई मतानुसार ईसा मसीह प्रभु के पुत्र है, प्रभु नहीं । इसलाम मतानुसार मौहमद साहब प्रभु के दूत हैं प्रभु नहीं है। परंतु हिन्दुओं के पावन सनातन धर्मानुसार यहाँ तो साक्षात् भगवान ही पधारते है।

हे हिन्दुओं! इससे बडा और क्या गौरव बोध चाहिए आपको उठकर खडे होने के लिए। हिन्दुओं की विरोधी दुनिया भी चिल्लाकर कहती है दुनियाँ की सबसे पुरानी पूर्ण प्रामाणिक भाषा है संस्कृत । सबसे पुराना पूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ है ऋग्वेद । जब इंग्लैंड में पहली पाठशाला खुली तब भारत में लाखों गुरुकुल तथा अनेक विश्वविद्यालय चलते थे। इसलिए उठा,जागो, स्वंय को पहचानो। उत्तिष्ठत् जाग्रत् प्राप्यवरान् निबोधत् ।



यद्यपि कलिकाल की विषम वायु का प्रकोप संसार के प्रत्येक प्राणी पर पड़ रहा है तथापि इस भीषणतम समय में भी कुछ सात्विक, आस्तिक जन हैं जो श्रुतिस्मृति पुराणेतिहास के अनुरुप जीवन यात्रा को पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध हैं। वे सतत गोद्विज देवकृपा बल से सन्मार्ग पर आरुढ़ हैं।

हमारी प्राच्य संस्कृति का उद्‌घोष है, कि "सुख का मूल धर्म है"

" **सुखस्य मूलं धर्म :**"

पुन: प्रश्न उठता है कि " **धर्मस्तावत् क:**" धर्म क्या है ? कहते है । "धर्म तो वर्णाश्रम धर्म ही है" **धर्मस्तावत् वर्णाश्रम धर्म: एवं** । तथा इस जीवन में न्यायोचित (नैतिक) समृद्धि पूर्वक परलोक में श्रेय प्रदान करनेवाले नियमों का आचरण ही धर्म है।

" **अथ अभ्युदय: नि: श्रेयस सिद्धि:स धर्म :** "

इसी शास्वत् सनातन धर्म का आलम्बन कर असंख्य जीवों ने शिवत्व को प्राप्त किया हैं। हम सभी सनातनी हिन्दुओं को भी अपने पूर्वजों की भाँति धर्म पथ पर चलना चाहिए ।

आज चारों ओर शास्त्र विरुध्द आचारणों की बाढ जैसी आयी हुई है। धर्म के नाम पर दिखावट-सजावट-बनावट का बोलबाला हैं। दर्शन भी प्रदर्शन का विषय हो गया है। इसी विकृति का एक हिस्सा है, जन्मदिन मनाने की विकृत परिपाटी ।

केक काटना, मोमबत्ती बुझाना, हैप्पी बर्थ डे टु यू गाना । इसमें न भारतीयता है, न धार्मिकता है, न सात्विकता है, न पवित्रता है। समाज को शास्त्रीय मत का

अनुकरण करने की प्रेरणा देने हेतु धर्मसंघ के मूल उद्देश्य के अनुसार हमारें श्रद्धेय वीतराग शिरोमणि **श्री त्र्यम्बकेश्वर चैतन्यजी महाराज (समर्थश्री)** ने "जन्मदिवस कैसे मनायें" नामक सरल तथा दिव्य इस पुस्तक का प्रणयन करके लोकोपकार किया है।

महाराजजी ने वर्तमान दशा पर दृष्टिपात करते हुए जो सनातनकार्य किया है, उसके लिए भूरिशः साधुवाद ।

श्रध्दासिक्ता माता श्रीमती गीतादेवी तिवारी की प्रेरणा से उदारमना श्रीमती प्रेमलता मुरारीलाल तिवारी ने अपने पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री विश्वम्भरलाल तिवारी की पुण्यस्मृति में इस पुस्तक को प्रकाशित कराया है । तदर्थ हम श्री रवि तिवारीजी सहित समग्र तिवारी परिवार के सर्वविध अभ्युदय की कामना पराम्बा माँ भगवती त्रिपुरसुन्दरी के पादारविन्दों में करते है।

डॉ. गुणप्रकाश चैतन्य

जन्मदिन क्यों मनायें।

ये अमीरों के धन खर्च करने के नाटक हैं। हमको इससे क्या? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक भी है। अच्छा भी है कि जन्म दिन मनाने की आवश्यकता ही क्या है? असंख्य जीवों में केवल मनुष्य ही तो जन्मदिन मना सकता है। मनुष्यों में भी केवल २५% ही मनाते होंगे, जो कि आर्थिक दृष्टि से, शैक्षिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से समुन्नत होंगे।

शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से पिछड़े, अभाव पूर्ण जीवन जीनेवाले, पेट की आग बुझाने में ही अमूल्य सांसों को ईधंन की तरह झोकने वाले, लोगों के घरों में जन्मे बच्चों का जन्मदिन मनाना परी लोक की कथा सुनाना जैसा है। इन सब पक्षों के रहते हुए भी जन्मदिन अवश्य मनाना चाहिए। प्रार्थना के लिए, पूजा के लिए, गौदर्शन के लिए, अपने पूज्यजनों को वर्ष में एक दिन उद्देश्यपूर्वक प्रणाम करके जीवन की मंगलमय उन्नति के लिए, आशीर्वाद पाने हेतु भी समय न निकलेगा तो फिर कैसे जीवन में परिवर्तन होगा?

कौन कहता है कि मंहगा सामान लाकर दिखावा करके (कर्जा करके) जन्म दिन मनाया जाये। कुछ भी न हो तो नहाकर, साफ वस्त्र पहनकर माताजी-पिताजी, दादाजी-दादीजी, चाचाजी-चाचीजी, ताऊजी-ताईजी, बड़ेभाई - बड़ी बहन, अध्यापक वृन्द सभी के चरणों में सिर रखकर अवश्य प्रणाम करें और निवेदन भी करें कि आज मेरा जन्म दिन है। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने मानवजीवन को सार्थक कर सकूँ, कुल जाति, धर्म,राष्ट्र के लिए शुभ कार्य करने योग्य बनूँ।

इसमें क्या खर्च होगा भाई ? जिसको भी प्रणाम करोगे वहीं गद्‌गद् होकर भावुक मन से आपको सद्‌भावों से भरी करुणा पूर्ण आशीर्वादमयीं स्नेहासिक्त वृष्टि से नहला देगा ।

अब समझ में आ गया न कि क्यों मनायें जन्म दिन? समझ गये तो बताओ क्यों मनायें? साधन विहीन हो अथवा साधन सम्पन्न सभी को मनाना चाहिए, अवश्य मनाना चाहिए ।

१. प्रश्न : अभी भी प्रश्न यथावत है कि क्यों मनायें जन्मदिन ?
उत्तर: हमारा जीवन रोग, उपद्रव, अशान्ति, कलह आदि से मुक्त होकर सुख, शान्ति, समृध्दि से युक्त होकर राष्ट्रोन्नति में उपयोगी बने, इसलिए आवश्यक है । जन्मदिवस पर विशेष पूजा, विशेष प्रार्थना, विशेष प्रणाम, विशेष प्रयत्नपूर्वक सामर्थ्यानुसार समाजसेवा ।

यह सब करके हमको मिलेगी विप्रगुरु, संत, वरिष्ठ, पूज्य, वृध्द जनों के आशीर्वाद की शक्ति, पुण्य का सम्बल, हदय में आत्मविश्वास तथा प्रतिवर्ष कुछ अच्छा करने की प्रेरणा। इसलिए जन्मदिवस मनाना आवश्यक है। १) विस्मरणशील (भूलनेवाला स्वभाववाले) मनुष्य को स्मरण कराने के लिए कि तुम संसार की सर्वश्रेष्ठ कृति हो। अतः अपना सर्व श्रेष्ठ प्रतिफल समाज को देना आवश्यक हैं। २) स्वयं का स्वयं ही परीक्षण करना कि, मैनें पिछले जन्मोत्सव से लेकर आज तक क्या खोया क्या पाया है? ३) जीवन में आगे बढे तो प्रभु को धन्यवाद देकर कृतज्ञता पूर्वक गंभीर हो जाये, विनम्र होवे। क्योकिं जिस डाली पर फल लगते हैं, वही झुकती है। फलरहित डाली नहीं झुकती। और यदि कुछ अच्छा नहीं रहा तो प्रार्थना करके आगे बढ़ने का प्रयत्न करें । इसलिए जन्मदिन आवश्यक है। ४) हम जो फल खाते हैं, जल

पीते है, धरती पर रहते हैं, सूर्य के प्रकाश का उपयोग करते हैं, पर्याप्त वायु का उपयोग करते हैं, ऑक्सीजन लेते है, नदी के घाटों पर नहाते हैं, हॉस्पिटल से दवा लेते हैं, कपडे पहनते हैं, भोजन लेते हैं, यह सब कहाँ से आता है? इसके लिए मैंने अभी तक क्या किया? क्या केवल पैसे से जल, फल, अन्न पाया जा सकता है? यदि नहीं तो मुझे कभी इन सुविधाओं का उपभोग करते समय, उस किसान का स्मरण क्यों नहीं होता जो भूखा नंगा पसीने से लथपथ खेत में काम करके ये अन्न उगाता है। क्यों उसके प्रति कृतज्ञता का भाव नहीं आया, क्यों उसका आदर न कर पाया? क्यों उसको धन्यवाद तक न दिया? किसान तक नहीं पहुँच सकते तो भगवान को ही कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद तो दे ही सकते है। बस इसी कृतज्ञता भाव से भरने के लिए जन्मदिन मनाना परमावश्यक है। प्रतिजन्म दिवसपर, वर्ष भर के लिए संकल्प ले सकते हैं। मैं यथाशक्ति पृथ्वी, जल, अग्नि (प्रकाश), वायु, आकाश को प्रदूषित होने से बचाऊंगा। मैं वृक्षारोपण करूँगा। मैं व्यर्थ जल तथा बिजली खर्च न करूँगा। मैं नियत स्थान के अतिरिक्त कहीं भी गंदगी (कूड़ा) न डालुंगा।

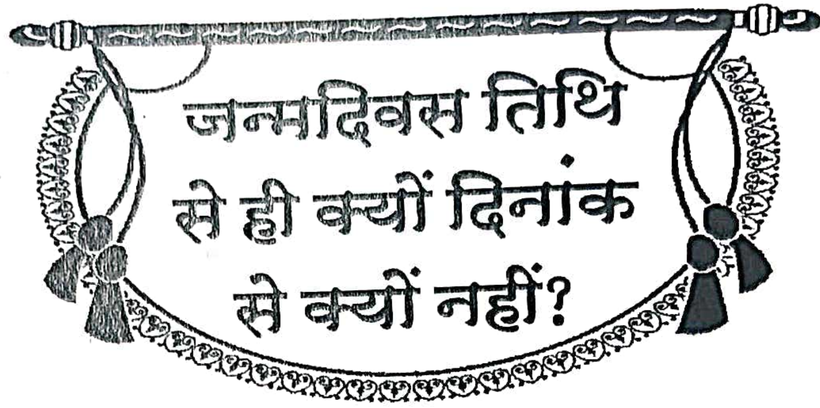
५) जिन माता-पिता की कृपा से यह शरीर मिला उनको क्या सुख दिया मैंने। उन्होंने लालन-पालन-शिक्षादि सहित मेरे लिए जो कष्ट सहे हैं। क्या मैं कभी उनके ऋण से मुक्त हो सकूंगा? यहीं भाव जगाने के लिए आवश्यक है जन्म दिन मनाना।

६) जिस दिन, जिस तिथि, जिस मास, जिस नक्षत्र, जिस सम्बत्सर में मेरा जन्म हुआ, उन सबके अधिष्ठाता देवताओं के प्रति कृतज्ञता पूर्ण पूजा भाव अर्पित करने के लिए आवश्यक है जन्मदिन मनाना।

७) मेरा मेरे पास क्या है ? मेरा मुझमें क्या है ? सब कुछ तो औरों से मिला। जैसे शरीर माता-पिता से शिक्षा गुरुजनों से, संस्कार परिवार से, शक्ति किसान द्वारा उगाये अन्न से तथा वेदलक्षणा भारतीय गौमाता के पवित्र दूध से । अतः इन सबके प्रति अपने कर्तव्य का बोध कराने के लिए आवश्यक है जन्मदिन मनाना ।

८) जन्म भूमि जननी जनक, देव पितर आचार्य ।
इन के वंदन हेतु ही, जन्मदिवस अनिवार्य ।।

९) नियति द्वारा निर्धारित हमारे जीवन का आज एक अमूल्य वर्ष कम हो गया। इस बीते हुए वर्ष में हमने क्या पाया ? (वास्तव में हम एक वर्ष बडे नहीं हुए, छोटे हो गये) यह स्मरण करके सावधान होने के लिए जन्मदिन अवश्य मनायें ।



यह प्रश्न हमारी दिशा तथा दशा का निर्धारक है। इसके उत्तर को जानने के लिए पहले हम यह जानं लें कि ...

१. तिथि क्या है?

२. दिनांक क्या है?

३. तिथि पुरातन है अथवा दिनांक ?

४. तिथि का प्रवर्तक कौन ?

५. दिनांक का प्रवर्तक कौन?

६. क्या भारत में १८०० ई. से पहले कभी किसी ने दिनांक से अपना जन्म दिन मनाया था?

७. क्या पहले दुनिया में किसीने भी कहीं भी अपना जन्म दिन दिनांकानुसार मनाया?

८. भारतीय सनातन संस्कृति में जन्मदिवस मनाने की परम्परा कब से है?

मेरे प्यारे सनातन धर्म की परम्पराओं का समादरपूर्वक पालन करने वाले बन्धुओं ! आपने इन बिंदुओं पर प्रामाणिकता पूर्वक विचार कर लिया, और इनका यथार्थ उत्तर पा लिया तो, आप कभी भी यह प्रश्न पूछेंगें ही नहीं। अपितु ऐसा प्रश्न करनेवाले को समुचित प्रेमपूर्वक, सरल भाषा में उत्तर देकर भारतीय संस्कृति के पावन गंगाप्रवाह में स्नान कराने का पुण्य भी पायेंगे। (कृपया सावधान, उत्तर देते समय प्रश्न पूछनेवाले पर खीझना नहीं, चिढ़ना नहीं, उत्तेजित होना नहीं, यह भी कभी न कहना कि अरे! तुम कैसे

हिन्दु हो? तुमको इतना भी नहीं आता? तुमको प्रश्न तक करना नहीं आता? आदि...)

तो चलें अपने विषय पर आते हैं।

प्रश्न : तिथि क्या है?

उत्तर : चन्द्रमा की घटती-बढती कलाओं के मान को तिथि कहते हैं।

- तनोति - विस्तारयति चंद्रकलां या सा
- तन्यते चन्द्रकलया या सा
- चन्द्रकला क्रिया रुपा या सा

जैसे प्रतिपदा द्वितीया.... अमावस्या पूर्णिमादि

प्रश्न : मास कितने हैं ?

उत्तर: बारह होते हैं।

चैत्र - वैशाख - जेष्ठ - आषाढ - श्रावण - भादों - आश्विन - कार्तिक -अगहन -पौष - माघ - फाल्गुन

प्रश्न : ऋतु कितनी हैं ?

उत्तर: छः होती है ।

ऋतु - वसंत - ग्रीष्म - वर्षा - शरद - हेंमन्त - शिशिर

प्रश्न : पक्ष कितने है?

उत्तर : पक्ष दो होते हैं। १) शुक्लपक्ष २) कृष्णपक्ष

शुक्लपक्ष - जब चन्द्र की कला एक-एक कर बढे तब शुक्ल पक्ष होता है। शुक्लपक्ष की पूर्णता पूर्णिमा को होती है। तथा उत्तर भारत में पूर्णिमा को ही मास पूरा होता है। पूर्ण चंद्र प्रकाश ।

कृष्णपक्ष - जब चन्द्र की कला एक-एक कर घटे तब कृष्ण पक्ष होता है। कृष्णपक्ष की पूर्णता अमावस्या को होती है। दक्षिण भारत में अमावस्या को ही मास पूरा होता है। (पूर्ण अंधकार)

प्रश्न : २ दिनांक क्या है?

उत्तर : अंग्रेजी ईसवी सन् के अनुसार जनवरी से दिसम्बर तक व्यवहार में आनेवाली तारीख (डेट) को दिनांक कहते हैं।

प्रश्न : ३ तिथि पुरातन है अथवा दिनांक ?

उत्तर : तिथि ही पुरातन है क्योंकि दिनांक तो २०१८ साल पुरानी ही है। जबकि तिथि मास सम्वत्सर का चलन तो अनादि है।

प्रश्न : ४ तिथि का प्रवर्तक कौन?

उत्तर : वेदों पुराणों की रचना जिसने की होगी वही तिथि प्रवर्तक होगा। क्योंकि वेद पुराण अपौरुषेय हैं, नित्य हैं। अतः तिथि थी नित्य है परमात्माकृत मान सकते हैं।

प्रश्न : ५ दिनांक का प्रवर्तक कौन है?

उत्तर : ईसा मसीह के जन्म से प्रारंभ मानी जाती है।

प्रश्न : ६ क्या भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व किसी ने अपना जन्मदिन दिनांकानुसार मनाया था?

उत्तर : नहीं ! कभी नहीं, किसी ने भी नहीं ।

प्रश्न ७ : भारतीय संस्कृति में जन्म दिवस मनाने की परम्परा कब से है ।

उत्तर : जब से षोडष संस्कारों का प्रारभ्भ हुआ तभी से जन्म दिन (वर्धापन संस्कार या वर्षगांठ) मनाने का चलन है। भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्री गणेश आदि के अवतार दिवसों पर भव्यतम, दिव्यतम भाव से आज भी उत्सव मनाये जाते हैं। श्रीराम नवमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, श्रीगणेश चतुर्थी आदि तिथियाँ ही भगवान के नाम से जुड़कर अनादि काल से सन्मानित हो रही हैं।

हे भारत वर्ष के भविष्य निर्धारक महानुभाव! हमारे समस्त सांस्कृतिक पर्व उत्सव जैसे होली, दीपावली, रक्षाबंधन दशहरा, शिवरात्री, नवरात्री, एकादशी आदि व्रत, वटसावित्री, करवाचौथ, तीज, हनुमान जयन्ती, श्रीराम - कृष्ण जयंती, श्री गणेश चतुर्थी, अक्षयतृतीया, गंगा दशहरा, श्राध्द पक्ष, गीताजयंती आदि सभी तो तिथि के अनुसार ही मनाये जाते हैं। कहीं भी दिनांक का प्रयोग नहीं है। आजकल अवश्य पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी राष्ट्रीय पर्व दिनांकानुसार मनाये जाते हैं।

आप सबसे मेरा भावभरा निवेदन है कि अपना तथा अपने परिचितों का, परिवारीजनों का, भाईबन्धुओं का, बच्चों का जन्मदिन तिथि के अनुसार ही मनाया करें। यही हमारी भारतीय काल गणना विद्या के प्रति श्रध्दाभाव पूर्ण आस्था होगी।

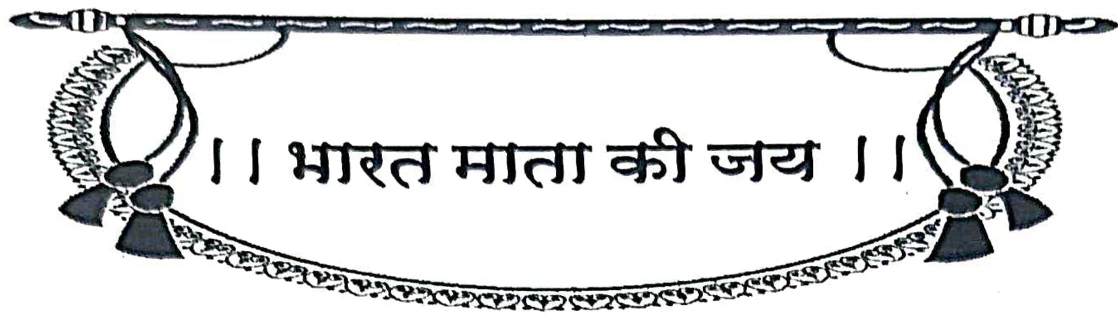
तथा तिथ्यानुसार जन्मदिवस मनाने से तिथि के देवता का अनुग्रह प्रसाद भी प्राप्त होगा। जो कि बालक के उत्तम भविष्य में उपयोगी होगा। बालक का बौध्दिक विकास होगा। उसका स्वास्थ्य उत्तम तथा ओजपूर्ण मुखमण्डल होगा ।

श्रावण मास में शिवपूजा भी तिथि से ही है दिनांक से नहीं। सोचने की बात यह है कि जब गणेश जी का जन्म दिन तिथि से मनता है तो फिर मेरा दिनांक से क्यों मनेगा ?

या तो गणेश जी का जन्मदिन गलत ढंग से मनाया जा रहा है, अथवा मेरा जन्मदिन गलत ढंग से मनाया जाता है। पर ये तो पक्का है कि गणेश चतुर्थी तो लाखों वर्षो से मनायी जाती है। शास्त्र के अनुसार वह सही भी है। मतलब साफ हे कि मेरा जन्मदिन ही गलत मनाया जाता है।

अतः अभी से मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मैं अपना जन्म दिवस तिथ्यानुसार ही मनाऊंगा। तथा सभी को इसके लिए तैयार करूंगा कि वे सब भी तिथि अनुसार ही मनायें ।

जहाँ तिथि अनुसार जन्मदिन न मनेगा वहाँ जाने से मैं बचूंगा ।



विशेष : विवाह की वर्षगांठ भी तिथि से ही मनायी जानी चाहिए ।

क्योंकि शिवरात्री भगवान शिव तथा माँ पार्वती के विवाह की वर्षगांठ निमित्तक उपासना ही तो है । भगवान राम एवं भगवती सीता के विवाह का उत्सव प्रतिवर्ष तिथि से ही मनाया जाता है तो फिर आप हिन्दु होकर ईसाई जैसा आचरण क्यों करते है।

इसीलिए सभी से आग्रह हैं कि आप विवाह निमित्तक उत्सव मनायें परंतु तिथि के अनुसार ही मनायें। क्यों कि तिथि का देवता है , मन्त्र है, शास्त्रों में तिथि का स्वरुप भी है। परंतु दिनांक का कुछ अता पता ही नहीं। अत: तिथि का ही प्रयोग करें ।

तिथि के अनुसार जन्म दिवसादि मनाकर हम भारतीय संस्कृति के प्रोत्साहन महायज्ञ में अपनी ये आहुति दे सकते हैं। राष्ट्रभक्ति का प्रसार कर सकते हैं। सनातन धर्म का मर्म भी यही है।

वैदिक विधि से जन्म दिन की पूजा

जन्मोत्सवे सदा ग्राह्या तिथिः तात्कालिकी मताः ।

जन्मोत्सव में सदैव जन्म कालीन तिथि का ही ग्रहण करना चाहिए ।

जिसका भी जन्म दिन है वे प्रातःकाल स्नान (कर सकें तो तिल का उबटन लगाकर तिलयुक्त जल से स्नान करें अर्थात बाल्टी में कुछ तिल डाल लें) करके नूतन (धुले हुए) शुध्द भारतीय वस्त्र पहनकर (धोती दुपट्टा पहने, सिले वस्त्र बनियान कुर्ता आदि नहीं) पूजा स्थान में पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठे । पवित्र होकर आचमन, प्राणायाम, तिलक करके संकल्प करें ।

तत् सत् अद्य एतस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे, श्री श्वेत वराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, जम्बूदीपे, भारतवर्षे, आर्यावर्तैक देशे, अमुक प्रान्ते,....जनपदे,..... ग्रामे....नगरे....क्षेत्रे अमुक तीर्थ समीपे (अमुक नदी समीपे) षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक सम्वत्सरे, ... अयने, ...ऋतौ, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, नक्षत्रे, ...योगे, ...करणे, ...दिवसे, अमुक राशि गते सूर्ये, अमुक अमुक राशि स्थितेषुचन्द्रादि ग्रहेषु, शुभ वेलायाम, अमुक गोत्रः ---- नामाहम, मम जन्म दिने, निरामय चिरायुष्य कामः विद्या बुध्दि सदाचार पूर्वक समुन्नति प्राप्तये अक्षत पुज्जेषु मार्कण्डेयादीनां चिरजीविनाम् षष्ठी देव्याः पूजनं करिष्ये । तत्पूर्वं विघ्नशमनाय गणपति पूजनं करिष्ये।

(वेदज्ञ योग्य विप्र हो तो सर्वोत्तम है जो विधिवत पूजन करा सकते हैं।)

स्वस्तिवाचन, कलशस्थ वरुण पूजन, यथा समय गणेश अम्बिका पूजन, षोडष मातृका, सप्त घृत मातृका पूजन,नवग्रह प्रार्थना करके वेदीपर अक्षत पुंजों में अथवा गणेशाम्बिका में ही देव पूजन करें।

१. श्री गणेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
२. श्री अम्बिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
३. श्री उमामहेश्वराय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
४. श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
५. श्री कुलदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
६. श्री स्थान देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
७. श्री पितृभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
८. श्री गुरुभ्यो नमः
९. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः
१०. श्री प्रह्लादिभ्यो भागवतेभ्यो नमः
११. श्री सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१२. श्री पंच महाभूतेभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१३. श्री इन्द्रादि दश दिग्पालेभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१४. श्री गौर्य्यादि षोडषमातृकाभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१५. श्री सप्तघृत मातृकाभ्यो नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१६. श्री क्षेत्रपालाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१७. श्री वास्तुदेवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१८. श्री शिवायै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
१९. श्री सम्भूत्यै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

२०. श्री प्रीत्यै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२१. श्री सन्नत्यै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२२. श्री अनसूयायै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२३. श्री क्षमायै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२४. श्री विघ्नवत्यै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२५. श्री भद्रायै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२६. श्री कालरुपाय परमात्मने नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२७. श्री कलियुगाधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२८. श्री सम्बत्सराधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
२९. श्री मासाधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३०. श्री पक्षाधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३१. श्री जन्मतिथी-अधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३२. श्री जन्म नक्षत्राधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३३. श्री राशि अधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३४. श्री लग्नाधिष्ठातृ देवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

अब सप्त चिरजीवियों के साथ ही
मार्कण्डेयजी की भी पूजा आवाहन करें ।

३५. श्री अश्वत्थाम्ने नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३६. श्री बलये नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३७. श्री व्यासाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३८. श्री हनुमते नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
३९. श्री विभीषणाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
४०. श्री कृपाचार्याय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।
४१. श्री परशुरामाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

४२. श्री मार्कण्डेयाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

४३. श्री षष्ठी देव्यै नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

४४. श्री इष्टदेवाय नमः आवाहयामि स्था. पूजयामि ।

निर्देश : यदि ४४ स्थान पर अक्षत (चावल) पुंज बनाकर पूजा करने की सुविधा हो तो करें सुविधा न हो तो श्री गणेश अम्बिका में ही इन सभी देवताओं की भावना करके सबका नामस्मरण करके पूजा करें।

तदनंतर प्रतिष्ठा करके यथावकाश यथा सामग्री से पंचोपचार अथवा षोडष उपचार से पूजा करके आरती पुष्पांजली प्रार्थना करें ।

विशेष : नैवेद्य (भोग) बाजार से नहीं लाकर घर में स्वयं पकायें । वेद लक्षणा देसी गौमाता का दूध लायें, केशर मेवा डालकर दिव्य खीर पकायें । अमृतोपम इस पवित्र आनन्द प्रद खीर का भोग लगायें। अन्त में सभी को इसी का प्रसाद बाटें (खूब बाटें) । देवता भी प्रसन्न, वितरणकर्ता भी प्रसन्न, खानेवाले अति प्रसन्न, गौमाता भी प्रसन्न ।

सप्त चिरंजीवी प्रार्थना

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषण : ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन : ।।
सप्तैताश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेय मथाष्टमम् ।
जीवेत वर्षशतं साग्रं अपमृत्यु विवर्जित : ।।

इन सातों का श्रीमार्कण्डेय सहित स्मरण कर वन्दन करने से अपमृत्यु शोक मोह दरिद्रतारहित सौ वर्ष तक जीने का लाभ होता है ।

श्री मार्कण्डेय पूजा पुष्पांजलि

मृकण्डु पुत्र मुत्कृष्टं शिवभक्तं महामुनिम् ।
माया मुकुन्द बोधज्ञं मार्कण्डेयं नमाम्यहम् ।।

इस श्लोक से मार्कण्डेयजी के निमित्त तिल गुड मिश्रित (भारतीय वेद लक्षणा गौ का) दूध अर्पित करें। पुष्प भी चढायें ।

प्रार्थना करें - हाथ जोंडे ।

मार्कण्डेय महाभाग सप्त कल्पान्त जीवन ।
आयुरारोग्य सिद्यर्थं अस्माकं वरदो भव ।।
चिरजीवी यथात्वं भो भविष्यामि तथा मुने ।
रूपवान वित्तवांश्चैव श्रिया युक्तश्च सर्वदा ।।
मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्त कल्पान्त जीवन ।
आयुरारोग्य सिद्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने ।।

षष्ठी देवी की प्रार्थना ।

ब्रह्मणो मानसी कन्या, देवसेना हलीश्वरी ।
विश्वे षष्ठीति विख्याता, षष्ठांशात् प्रकृतेर्यतः ।।
मातृरुपा दयारुपा, शश्वद रक्षण रुपिणी ।
जले स्थले चान्तरिक्षे, सर्वदा सर्वदावरा ।।
रुपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान देहि धनं देहि सर्वान कामाँश्च देहि मे।।
जगन्मातः जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणी ।
प्रसीद मम कल्याणी, नमोस्तु षष्ठि देवते ।।

यथाशक्ति गोघृत दान, तिलदान ब्राह्मण को करें।।
इससे आयु, ऐश्वर्य यश बढ़ेगा । पापक्षय होगा । अन्नदान भी अवश्य करायें। वेदपाठशाला जायें ।



तिलगुडमिश्रित दुग्ध पान

महर्षि मार्कण्डेय को पूर्व में समर्पित जो गुड़ तिल सहित दूध था उसे यजनकर्ता (जिसका जन्मदिवस है) आयु वृध्दि हेतु पिये ।

सतिलं सगुड़ दुग्धं, अंजल्यर्धमितं सुधीः ।
मार्कण्डेयात् वरं लव्ध्वा, पिवेत आयुः विवृद्धये ।।

आचमन करके शुध्द हो जाये। तथा पूजा समर्पण करके आसन के नीचे जल ड़ालकर अपने माथे पर तिलक करें (शक्राय नमः) बोले देव विसर्जन करें ।

सभी पूज्यों का अभिवादन

अपना नाम गोत्र बोलकर सभी गुरुजनों विप्रो सन्तों माता-पिता तथा परिवार के सभी बडों को प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त करें ।

रक्षासूत्र बन्धन

अपने पुरोहितजी, आचार्यजी सहित उनमें से जो भी हों, उनसे रक्षा सूत्र बंधवायें ।

और क्या कर सकते हैं।

- यथावकाश सामूहिक भगवन्नाम संकीर्तन रख सकते हैं।
- सामूहिक हनुमान चालीसा के पाठ रख सकते हैं।
- सामूहिक सुन्दरकाण्ड पाठ रख सकते हैं।

- अखण्ड रामायण का पाठ भी रख सकते हैं।
- गीता पारायण रख सकते हैं।
- जितने वर्ष हो गये जीवन के उतने गोघृत अथवा शुध्द तेल के दीपक जलाकर भगवान को अर्पित कर सकते हैं।।
- किसी तीर्थ में जाकर जन्म दिन मना सकते हैं।

  परन्तु सावधान कहीं भी मनाये, वैदिक विधि का ही यथा संभव पालन करें। आस्तिकता का आधार सात्विकता ही होना चाहिए। जन्मदिन का पर्व भविष्योत्थान से जुड़ा है। अतः शास्त्रमर्यादा का पालन अवश्य हो।
- उस दिन गौशाला जाकर अपने हाथ से संकल्पित सेवा हराचारा गुड़ लाप्सी चोकर दलिया आदि दे सकते हैं।
- वैदिक गुरुकुल जा सकते हैं।
- वृध्दाश्रम, अनाथाश्रम, अस्पताल, गरीब बस्ती में भी जा सकते हैं।

संक्षिप्त विधि

पवित्र होकर गणेश स्मरण नमन पूजन।

सप्त चिरंजीवी स्मरण पूजन नमन।

मार्कण्डेय स्मरण नमन पूजन।

गुड़तिल युक्त गोदुग्ध का अर्पण करें।

षष्ठीदेवी का स्मरण पूजन नमन करें।

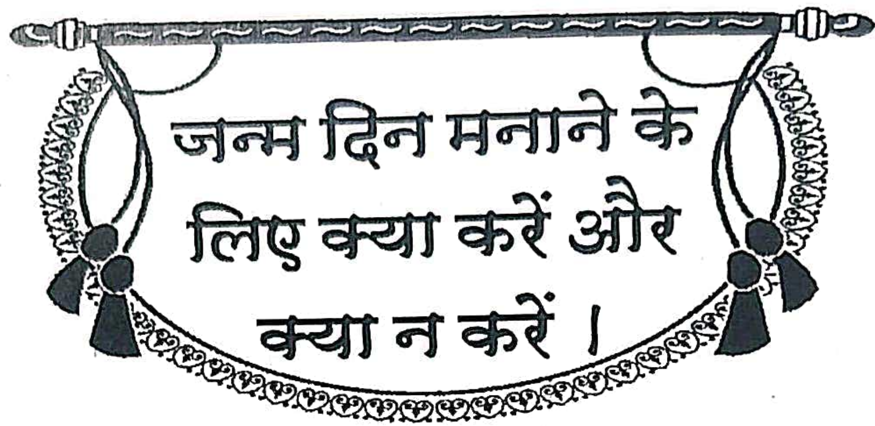
आरती पुष्पांजली करें।

बडों को प्रणाम करके आशीर्वाद ले।

रक्षासूत्र बंधवायें। पर्याप्त खीर बनायें, घर पर ही उसका भोग लगायें। उसी का प्रसाद बाटें पर्याप्त बाटें।

जन्मदिवस की इस संक्षिप्त विधि को पारस्कर गृह्य सूत्र व आदित्य पुराण, संस्कार प्रकाश गीताप्रेस, गदाधर .....

इन ग्रन्थों से सहयोग लेकर तैयार किया है।



हे भारत गरिमा सम्बर्धन सन्नध्द आर्यजन ! आपसे निवेदन है कि, स्वयं को हिन्दुत्व भाव से भरकर, राष्ट्रभक्ति के प्रकाश से हृदय को आलोकित करके, स्वयं को सनातन संस्कृति का प्रतिनिधि मानते हुए, ऋषियों द्वारा बतलाये मार्ग पर चलने का संकल्प करें । और वही करें जो शास्त्र में निर्देशित है । जैसे कि

१. जन्मदिन तिथि के अनुसार ही मनायें ।
दिनांक के अनुसार कदापि नहीं ।

* क्योंकि हमारी ज्योतिष विद्या का आधार तिथि है। पर्वों का आधार तिथि है। दिनांक नहीं।
* क्योंकि हमारे वेद पुराण, स्मृति आदि शास्त्रों में कहीं भी दिनांक का उल्लेख ही नहीं है।
* क्योंकि हमारा नामकरण संस्कार तिथि नक्षत्र के आधार पर हुआ था दिनांकानुसार नहीं।
* क्योंकि हमारे पूर्वजों, ऋषियों, अवतारों ने तिथि का आश्रय लेकर ही मुहूर्त विज्ञान को प्रकाशित किया, यज्ञ, भागवत, विवाह, मन्दिरस्थापना का निर्णय भी तिथि से ही होता है।
* क्योंकि जगन्नाथ भगवान की समग्रोपासना तिथि पर आधारित है दिनांक पर नहीं।
* क्योंकि चारों धाम के द्वारोद्घाटन तथा पटाक्षेप का आधार तिथि है दिनांक नहीं ।

* क्योंकि हमारा अनूठा सांस्कृतिक महापर्व महाकुम्भ तिथि से होता है दिनांक से नहीं ।
* क्योंकि कृष्ण, राम, गणेश आदि के जन्मोत्सवभी तिथि से मनाये जाते हैं, दिनांक से नहीं
* क्योंकि तिथि सनातन पुरातन अनादि है जबकि दिनांक व्यवस्था २००० साल मात्र पुरानी है ।
* क्योंकि सनातन धर्म का आधार तिथि है, दिनांक नहीं।

२. क्योंकि तिथि हिन्दुत्व है दिनांक ईसाईयत है। जन्मदिन पर गोघृत अथवा शुध्द तेल के दीपक जलायें ।

मोमबत्ती जलाकर बुझाने का जघन्य पाप कार्य कदापि न करें ।

* क्योंकि भारतीय संस्कृति में दीपक जलाकर दीपदान की विधि है परन्तु दीपक बुझाने की बात कहीं नहीं हैं ।
* क्योंकि दीपक का बुझना तथा बुझाना दोनों ही दोषकारक हैं ।
* क्योंकि मोमबत्ती का शास्त्र में कहीं भी उल्लेख नहीं हैं ।
* क्योंकि दीपक हमारी संस्कृति है, जबकि मोमबत्ती विकृति हैं ।

३. गौमाता के पवित्र दूध से बने हुए खीर, रबडी, पेडा आदि का ही मिष्ठान्न बनाकर भोग लगायें अथवा फलों का अथवा मेवाओं का भोग लगायें, परन्तु कदापि केक नामक (कूडा कर्कट)उस अपवित्र अग्राह्य मिठाई नामक जहर को घर न लायें ।

क्योंकि पवित्र भाव से भरा हुआ पवित्र तन तथा वस्त्रवाला व्यक्ति पवित्र पदार्थो से ही पवित्रता पूर्वक बनाये गये नैवेद्य को देवताओं को अर्पित करने की आज्ञा शास्त्र देते हैं। जबकि केक पवित्र नहीं है।

४.   जन्मदिन के पावन अवसर पर अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, सांस्कृतिक दिव्य भाषा का ही प्रयोग करें। फिल्मों से मिली सीख को जीवन में न उतारे। चित्रपट को चित्तपट से दूर ही रखें । फिल्म मनोरंजन के लिए हैं। मानव जीवन का उनसे क्या उत्कर्ष हुआ है ? या हो रहा है। या होगा। सब जानते हैं।

यदि कदाचित् एक दो उदाहरण आप खोज भी लें कि फिल्म से ये शिक्षा मिली अमुक व्यक्ति सुधर गया तो फिल्मों से कितने व्यक्ति नष्ट हुए कितने परिवार उजड़े इसका भी कोई विवरण दोगे।

अच्छा छोड़ों स्वयं से ही पूछो, सच में आपको फिल्म से क्या लाभ हुआ। क्या वही लाभ अपनी बच्चियों, बच्चों को मिले ऐसा चाहोगे ? नहीं ना अत: फिल्मी गीत या अंग्रेजी के वाक्य नहीं बोलकर अपनी पवित्र संस्कृत भाषा के लघुगीत गाये, राष्ट्र भाषा के प्यारे गीत गायें।अपनी लोकभाषा, आंचलिक भाषा मातृभाषा को भी आदर दें । यह भी राष्ट्रभक्ति है। राष्ट्रप्रेम का विस्तार है।

यदि कोई कहने लगे आपसे कि, क्या फर्क पडता है, भाषा से । भाव अच्छा होना चाहिए। भाषा चाहे अँग्रेजी हो, चाहे अन्य कोई हो, जो सरलता से चलन में है उसी को बोलो ना।

हम पूछना चाहते है कि, वह कौन षड़यन्त्रकारी है ? जिसने हमारे हाथ से गंगाजल हटाकर गंदाजल दिया। और हम सरलता से मिलने के कारण गंगाजल की जगह गंदाजल पिये जा रहे हैं। कोई समझाये, जगाये तो घिसा पिटा कुतर्क देकर पल्ला झाड लेते हैं। संकीर्ण बताते हैं। साम्प्रदायिक बतातें हैं। समाज को बाँटने वाला बताते हैं। असहिष्णु अलापते हैं।

कौन है जिसने आपके अमृतोपम आयुर्वेद विज्ञान को नष्ट करके तुच्छ बताकर, मरा हुआ बताकर अप्राप्य बताकर, महँगा बताकर, अपनी सड़ी गली, घोर विनाशक, शरीर को खोखला करनेवाली, एक रोग के स्थान पर सैंकड़ों रोग देनेवाली, उनके आर्थिक लाभ के लिए भारतवासियों की जिन्दगी से खिलवाड़ करनेवाली ऐलोपैथी थोपदी। बोलो उत्तर दो। नहीं दे सकोगे। तुम पर उत्तर है भी नहीं।

मैं पूछता हूँ । कौन है जिसने भारतीय गौ की जगह जरसी जानवर को अधिक दूध का हवाला देकर भोलेभाले भारतीयों के ऊपर थोपा है।

कौन है जिसने परम्परागत गोबरादि के खाद से खेती करनेवाले भोले किसानों को यूरिया का गुलाम बनाकर हमारी कृषिभूमि को बंजर बनाया है? एक समय था बीज हमारे होते थे, खाद घर के पशुओं का होता था, खेत अपने तथा मानवीय श्रम भी अपना होता था। कम ही सही परन्तु स्वास्थ्य के लिए दिव्य अन्न प्राप्त होता था। आज खेत तो अपने हैं पर खेती अपनी नहीं। न बीज अपना, न खाद अपना, न पेस्टीसाइड अपना, किसान आत्महत्या करने को लाचार है। क्यों लागत अधिक है पर आय उतनी नहीं। जो अन्न फल सब्जी मिलती है वह विषाक्त है, सैकडों रोगों को जन्म देनेवाले है।

इसलिए कौन लोग हैं ये जिनको आंतकवादी के मारने पर मानवाधिकार याद आते हैं। राष्ट्र खतरे में नजर आता है।

सैनिकों के मरने पर, निरपराध जनता के मरने पर बिलखते बच्चों के ऊपर इन निकृष्टतम लोगों का मुख सिल क्यों जाता है, नेत्र अंधे, कान बहरे क्यों हो जाते हैं?

कौन है जो हिन्दी, संस्कृत को हीन बताकर अँग्रेजी को श्रेष्ठ बताते और हम पर थोपते आये हैं। कौन है वो जिसने पवित्रात्मा हिन्दुओं के बच्चों के मन में धोती के प्रति घृणाभाव हीनभाव भर दिया ? तथा कटी - फटी जली दरिद्रता सूचक जींस के लिए धन्यभाव भर दिया है ?

मैं बताऊं, ये वो दोगले निकम्मे दलाल हैं, गद्दार हैं, जो रहते यहाँ, खाते यहाँ, परतु गीत भारत विरोधियों के गाते हैं। जहाँ से इनको हराम का पैसा मिलता है इस सब पाप को फैलाने के लिए।

सोचो-जागो- समझो- कौन है जो हमको प्रचार की आँधी से अंधे करके हमारे बच्चों के हाथ से दूध, छाच, लस्सी, पराठा, फलों का ताजा रस, छीनकर हमारे बच्चों के हाथों में पेप्सी कोला, पिज्जा, बर्गर जैसी सड़ी गली वस्तुए थमा चुके हैं ?

कौन हैं जिन्होंने तुम्हारे बच्चों को समझा दिया कि गाय के पवित्र गोबर से बदबू आती है ? जबकि कुत्ता गोद में बैठा है। साथ सोता, खाता है और उससे खुशबू आने लगी है।

मेरे भाई बहन ! समय रहते समझ जाओ । अपनी भाषा, अपना वेष, अपना भोजन, अपना साहित्य, अपने संस्कार, अपना देश अपनी संस्कृति, अपने महापुरुष, धरती पर सर्वोत्तम थे सर्वोत्तम है, सर्वोत्तम रहेंगे। अतः हीनभावना को त्यागकर अपनी संस्कृति का पालन गौरवपूर्ण भाव से करें।

हम किसी की निन्दा के लिए यह सब नहीं कहते, न ही किसी का अपमान करना हमें सुहाता है। हमारा ध्येय है - सच्चाई, धार्मिकता.

अपनी परम्पराओं का अपने संस्कारों का, अपने धर्म का पालन दृढता से करें, श्रद्धा से करें। परंतु दूसरों की मान्यताओं का आदर भी करें।

पालन अपने धर्मका हो पर आदर मनुष्य मात्र का करें ।

* निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निजभाषा ज्ञान के मिटै न हियको शूल ।।

* इसलिए हैप्पी बर्थ डे टू यू नहीं गाना है। नहीं गाना मायने, नहीं गाना। जैसे जानने के बाद कोई भी व्यक्ति जहर नहीं खाता, वैसे ही ये हमारी संस्कृति का विनाशक मंदा जहर है। इसके स्थान पर क्या बोले ? इस जिज्ञासा के शमनार्थ इन नीचे के पावन सरल मधुर पदों को गायें ।



तव जन्मदिनं - शुभदं भवतात्

श्रुतिदं सुखदं रसनारसदं,
धनदं पददं गतिदं मतिदम ।
रजनीशकर प्रतिभाश्रय दं,
तव जन्म दिनं शुभदं भवतात ।।
शुभजन्मदिनं भवताम् भवतात् ।।

तवलोचन चर्म मुखश्रवणम्,
हरिपाद सरोज परं भवतात ।
जय कीर्तिकरं गृहदं परदं,
तव जन्मदिनं शुभदं भवतात।।
शुभजन्मदिनं भवतां भवतात् ।।

शतवर्षमितं वयसा भुवने,
परमार्थ परो भव भक्तिरतः।
सफलं कुरु मानव जीवन कं,
सुरलोक सुखं सततं जयतात।।
तव जन्मदिन शुभदं भवतात् ।।

संस्कृत रचना - २

त्वदीये जन्म दिवसे भो ।
त्वदीयं मंगलं भूयात।।
त्वयि संकल्पना शक्तिः,
त्वयि या भावना भक्तिः
त्वयि सौजन्य भा युक्तिः,
समेषां शंकरी भूयात् ।।
त्वदीये जन्मदिवसे भो....
असाफल्यं च नैराश्यं,
कदापि नो भवेत मार्गे।
विपदभ्यो जीवने त्वां वै,
महादेवो हरः पायात।।
त्वदीये जन्मदिवसे भो,
त्वदीयं मंगलं भूयात् ।।

शतं शरदो हि संसारे,
परार्थं त्वं वसेः हृद्यः ।।
सुराणां पूर्वजानां वै,
कृपा दृष्टिः सदा त्वयि स्यात् ।
त्वदीये जन्मदिवसे भो,
त्वदीयं मंगलं भूयात।।



पुण्यदं वै भवेत् दिव्य वर्धापनं,
शोभनं शोभनं शोभनं शोभनं।
उत्तमं ह्युतमं ह्युतमं ह्युतमं,
पुण्यदं वै भवेत, दिव्य वर्धापनम् ।

सदगुरो : वंदनं पितृदेवार्चनम्,
मोह मालिन्य मुक्तो भवेज्जीवनम् ।
सौख्य संतोष सिध्द : सुधासिंचित:,
राष्ट्रभक्त्या विपूतो, भवे च्चिंतनम् ।।
पुण्यदं वै भवेत, दिव्य वर्धापनम् ।

वंश विस्तार कीर्त्या हि संशोभितं,
दिव्य जन्मोत्सवे स्वागतं स्वागतम् ।
ईश सत्ता प्रसन्ना भवेत् त्वयि सदा,
सत्य सौशील्यसिक्तं सदा सद्धनम् ।
पुण्यदं वै भवेत, दिव्य वर्धापनम् ।

सद्गुणैरेधतामेधता मेधताम्,
राष्ट्रभक्ति र्मतौ वर्धतांवर्धताम् ।
शास्त्र निष्ठा विशुद्धा प्रकामं भवेत्,
संपदा सर्वदा स्वर्गदा संभवेत्,
पुण्यदं वै भवेत दिव्य वर्धापनम् ।।

हिन्दी रचना - ९

जनम दिन की तुम्हें प्यारे
बधाई है, बधाई है ।
जनमदिन की बधाई है,
बधाई है, बधाई है ।

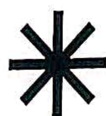
तुम्हारे यश के सौरभ से,
धरा सारी सुगन्धित हो।
बड़ो का स्नेह भाजन बन
कनिष्ठों से विवंदित हो।।
खुशी सब और छाई है ।।
जनम दिन की बधाई है
बधाई है, बधाई है ।

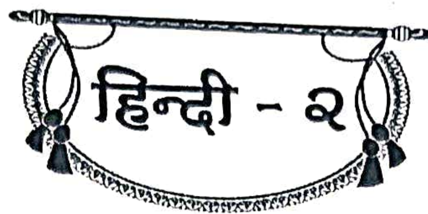
जिओ सौ वर्ष तक जग में
निरोगी बनके उपयोगी ।
हृदय में राष्ट्रभक्ति की
प्रभा लेकर बनो योगी ।
नियति शुभदिन ये लाई है ।
जन्म दिन की बधाई है।
बधाई है, बधाई है।

सदा सत्कर्म करके ही,
सभी को प्रेरणा देना ।
शिवा-शिव पाद पद्मो में,
विनत शिर अपना रख देना ।।
सुखद ये बेला आई है।।
जनम दिन की बधाई है।
बधाई है, बधाई है।

पिता की ओर से प्रिय सुत बधाई है, बधाई है । जनमदिन की बधाई है।

जननि की ओर से बेटा ....
बहिन की ओर से भैया ....
बुआ की ओर से लाला.....
सखा की ओर से प्रियवर ...
अनुज की ओर से दादा....
सभी की ओर से तुमको...





आज फिर से जन्मदिन सुखद् आ गया।
सब दिशाओं में सुरभित पवन छा गया।

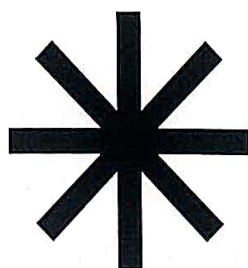
फूल पत्तों से घर को सजाया गया,
स्वागतं कहके सबको बिठाया गया।
सबके माथे पै चंदन टीका किया,
एक पल में भवन दिव्यता पा गया।

दिव्यता से भरा कैसा अद्‌भुत अहा,
देवभाषा का गायन निरंतर बहा ।
राष्ट्रभाषा में कितनी मधुरता भरी,
कौन है जो बधाई, भजन गा गया।।
आजफिर से जन्मदिन सुखद आ गया।।
सब दिशाओं में सुरभित पवन छा गया ।।

षष्ठि देवी चिरंजीवी पूजे गये,
वेदमन्त्रों के स्वर दिव्य गूंजे नये।
गम भुलाकर सभी थे मगन आज तो,
सबका हंसना हंसाना गजब ढा गया।।
आज फिर से जन्मदिन सुखद आ गया।।
सब दिशाओं में सुरभित पवन छा गया ।।

घी के दीपक जले शुभ बधाई गवी,
कृष्ण राधा के जैसी मुखों की छवी ।
गाय के दूध की खीर अमरित बनी,
रोक पाया न खुद को, अधिक खा गया।।
आज फिर से जनम दिन सुखद आ गया।।
सब दिशाओं में सुरभित पवन छा गया ।।

देखकर ये लगा, ऐसे मैं भी करूं।
अपने आंचल में खुशियाँ हजारों भरूं,
राष्ट्रभक्ती भरा जन्मदिन का सुघड,
ये महोत्सव अनूठा मुझे भा गया।।
आज फिर से जनम दिन सुखद आ गया।
सब दिशाओं में सुरभित पवन हो गया ।





है जन्म दिवस पर अभिनंदन ।

अभिमान रहित पावन उपवन,
सौ वर्ष रहे सुखमय जीवन ।
प्रति वर्ष युही हम करें तिलक,
माथे पर शुभ रोली चंदन ।।
है जन्मदिवस पर अभिनंदन ।।
है जन्मदिवस पर अभिनंदन ।।

तुम हर बाधा को पार करो,
बस जगती का उपकार करो।
इच्छित संकल्प सदा पूरे,
तुम रमण करो मानस नन्दन ।।
है जन्म दिवस पर अभिनदंन ।।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ।।

संसार समर से क्या डरना,
आशीष कवच से भव तरना।
बैकुण्ठ तलक भी पा लोगे,
चढ प्राण प्रभंजन का स्यन्दन ।।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ।

हो पुलकित सब परिवारीजन,
कुछ ऐसा ही करना साधन ।
जग कीर्ति पता का फहराये ।
नभ धरा करे तुमको वंदन ,
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ,

सब दोष मिटे सत्संग किये ।
दुख दैन्य मिटे शुभ दान दिये ।
हरि पाद सरित जल पीकर के,
तन-मन होता निर्मल कुन्दन ।।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ,
है जन्म दिवस पर अभिनंदन ,

मानव तन पाकर दिव्य बनो।
दिनकर के जैसे भव्य बनो ।
परमार्थ भाव से विनय करें
मिट जाये जगत का सब क्रन्दन ।।
है जन्म दिवस पर अभिनंदन,
है जन्म दिवस पर अभिनंदन,

जन्मदिन मनानेवाली तिथि में आज के दिए नाखून न काटें, बाल न कटायें, स्वयं भी दाढी आदि न काटें, प्याज लहसुन मांस मदिरादि निषिद्ध पदार्थो का स्पर्श करने वाले का स्पर्श भी न करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। किसी से कलह विवाद न करें। किसी भी प्रकार की हिंसा से बचें ।

खण्डनं नख केशानां मैथुनाध्वगमौ तथा ।
आमिषं कलहं हिंसां वर्ष वृध्दौ विवर्जयेत।।

इस ग्रंथ की पूर्णता पर आप सभी से निवेदन है कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीताजी में जो कहा है उस पर विचार अवश्य करें। बारबार श्रीकृष्ण शास्त्र प्रमाण पर बल देते हैं । कार्य तथा अकार्य कार्य (विधि) अकार्य (निषेध) के प्रसंग में एक मात्र शास्त्र ही प्रमाण है। अन्य कोई नहीं।

तस्मात शास्त्रं प्रमाणं ते, कार्याकार्य व्यवस्थितौ । (गीता)

श्रीकृष्ण कहते है - हे पार्थ, जो लोग शास्त्र विधि का उल्लंघन करके, मनमाना आचरण करते हैं उनको सफलता नहीं मिलती नाही, सुखशान्ति ही होती है।

यः शास्त्र विधि मुत्सृज्य, वर्तते काम कारतः ।
न स सिद्धि मवाप्नोति, न सुखं न परां गतिम् ।।

हे हिन्दुकुलकमल दिवाकर !
हे भारतीय भावना के विस्तारक !
अब आप ही स्वयं ही सोचे। क्या हमारे लिए श्रीकृष्ण भगवान से बढकर भी कोई अन्य हितकारी मिल गया है। यदि नहीं तो आप ही बतायें कि केक काटना, मोमबत्ती बुझाना, हैप्पी बर्थ डे...
ये आपके किस पुराण में लिखा है। किस धर्म ग्रंथ में लिखा है। यदि हिंदी संस्कृत सहित भारतवर्ष की किसी भी प्रान्तीय आंचलिक भाषा अथवा बोली में यह नहीं लिखा तो फिर आप हिन्दु जन्म दिन पर ये मनमानी मनगढंत कदाचार क्यों कर रहे हैं ?

यः = जो भी धर्मनिष्ठ व्यक्ति
शास्त्रविधिं = शास्त्रीय वैदिक विधि को
उत्सृज्य = त्यागकर
काम कारतः = मनमानी कल्पित उछलकूद
वर्तते = करता है
सः = वह मनमानी करनेवाला शास्त्रविधि का उल्लंघन करता चाहे कोई हो
सिद्धि : = सफलता को
न आप्नोति = प्राप्त नहीं करता
नसुखं = सुख भी नहीं पाता।
न परां गतिम् = न ही सद्गति ही पाता है।

मेरे प्यारे भाई बहिन । इससे बड़ी और क्या घोषणा चाहते हैं आप । क्या श्रीकृष्ण स्वयं आकर हाथ पकडेंगे। तब मानोगे । परतु मुझे आशा है, हठधर्मी किसी भी प्रकार नहीं मान सकता जैसे दुर्योधन तो पांचगांव मांगने पर भी न माना । बल्कि कृष्ण को बंदी बनाने की चाल चलने लगा ।। जबकि श्रध्दालु तो शास्त्र को भगवान की आज्ञा ही मानता है। अतः शास्त्र वचनों का यथावत पालन करता है।

समय रहते आप भी जगें । सबकुछ खोकर जगे तो फिर क्या बचेगा ।

जन्मदिन गीत

तुम जिओ हजारों साल ।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

सबसे आगे बढते जाओ ।
नित उन्नति पथ चढते जाओ ।।
वर चलो सिंह की चाल ।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

संशय शोक शमन हो पल में ।
मिले सफलता नथ जल थल में ।।
सब कटें दुखों के जाल ।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

खुशियाँ आगन को महकाये ।
खुश होकर सब खुशबू पायें ।।
हम गाते दे लय ताल ।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

दीप ज्योति से तम मिट जाये ।
पूजा का फल हृदय समाये ।।

नव सजे आरती थाल ।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

राष्ट्रप्रेम का दीपक लेकर ।
सबको हरपल खुशियाँ देकर ।।
प्रिय पा जाओ गोपाल।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

सपने हो साकार तुम्हारे ।
सब जन के तुम बनो सहारे ।।
जग होवे सभी निहाल।।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

सेवाधर्म सदा अपनाओ।
यश धन गौरव जग में पाओं।
तव पडे गले जयमाल।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।

सत्य प्रेम मन अपनापन हो ।
त्र्यम्बक भाव सफल जीवन हो।।
ये दमके उन्नत भाल ।
तुम जिओ हजारों साल।।
शुचि लेकर हृदय विशाल ।।



लिखनेवाले आप हैं , शब्द स्वयं हैं आप ।
अर्थ बोध भी आप हैं, पाठकजन भी आप ।।

जलतरंग ज्यों खेलती, लिए नबल उल्लास ।
प्रलय सृजन का खेल ये, चेतन का आभास ।।

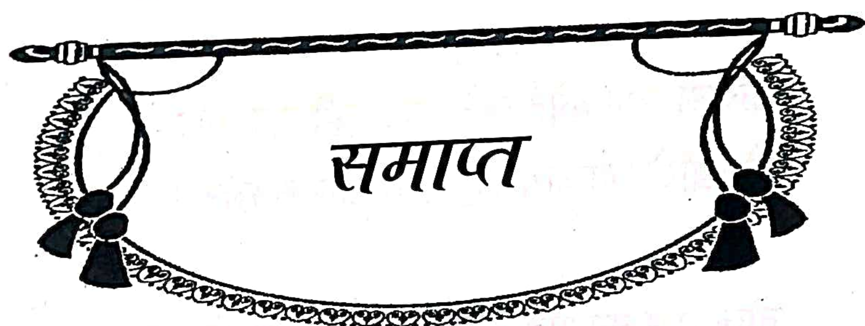
किससे क्या कोई कहे, एक तुही सब ओर।
जो खोजे खोजाये वह, तेरा ओर न छोर ।।

बीज वृक्ष का भेद है, दधि पय का या भेद ।
रज्जुसर्प का भ्रम समझ, स्वप्न समझ कह वेद।।

जन्मदिवस पूजा विधि, भाव सहित सम्पन्न ।
श्रावण शुक्ला नौमि तिथि, रच त्र्यम्बक है धन्य ।।

त्र्यम्बक तुमको सौंपता, त्र्यम्बक शब्द प्रकाश ।
त्र्यम्बक तीरथ क्षेत्र है, त्र्यम्बक उर विश्वास ।

मीरा-भायन्दर मुंबई श्रावण शुक्ल नवमी
२०७६ परिधावी, तदनुसार - ९/८/२०१९


समाप्त

समर्थ श्री त्र्यम्बकेश्वर चैतन्य :

।। महाराजश्री का साहित्य ।।

प्रकाशित ग्रन्थ :-

१. चिन्तामणि संकलन प.पू. विरक्त सिरोमणि स्वामी श्री लक्ष्येश्वराश्रम जी महाराज (भाग १-२)

२. श्रीरामायण पीयूष

३. श्रीमद्‌देवाभागवत पीयूष

४. तत्वबोधटीका

५. भजन पीयूष (हिन्दी भजन)

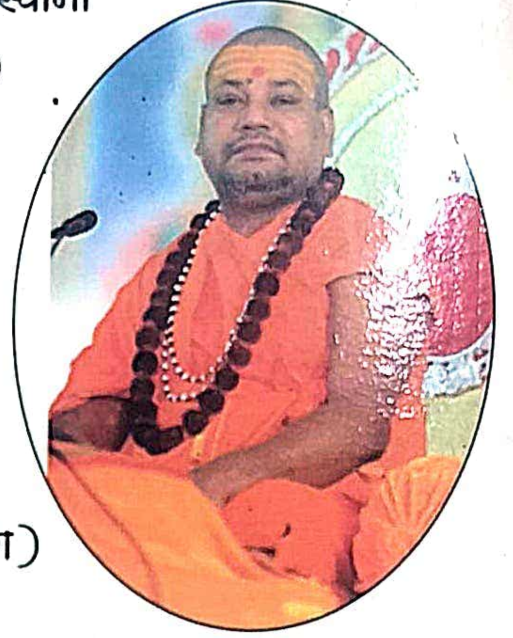
६. शिवपुराण पीयूष

७. प्रार्थना पीयूष (संस्कृत स्तोत्र)

८. वन्दे महापुरुष ते चरणरविन्दम् संस्कृत (भाग)

९. भृगुक्षेत्र स्मारिका

१०. देवपूजा पीयूष



प्रकाश्यमान साहित्य-

१. भागवत प्रकाश संपादन प.पू. प्रात: स्मरणीय यतीन्द्र कुलतिलक श्री विष्णु आश्रम जी महाराज (शुक्रताल-विहारघाट)

२. वैदिक सत्यार्थ प्रकाश "संपादन" प. श्री. अखिलानंद जी अनूपशहर

३. जीवन दर्शन पीयूष

४. धर्मसंघ दिग्दर्शिका

५. भागवत पीयूष

६. हरिवंशपुराण पीयूष

७. काव्य पीयूष (संस्कृत कविता)

८. भजन पीयूष (हिन्दी) भाग-२

९. प्रश्नोत्तरी पीयूष

१०. शंकराचार्यग्रंथावलि आदि अन्य

११. शिक्षा दोहा पीयूष

१२. गीता पीयूष

१३. सनत्सुजांतीय पीयूष

१४. महाभारत पीयूष (भाग-५)

१५. प्रकृति पीयूष संकृत कविता)

१६. गो महिमा पीयूष

१७. सन्ध्या वंदन पीयूष ।

१८. प्रदोष पूजा पीयूष

१९. वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्द भाग २

२०. वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्द भाग ३

२१. प्रार्थना पीयूष भाग २

२२. श्रावणी उपाकर्म पद्धत्ति



978-81-939146-7-0